सम्पादकीयम्

भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिद्ध्यति। (मनुस्मृति १२/९७) के अनुसार भौतिक-अभौतिक जगत् में जो कुछ भी घटित होता है वह सब वेद से जाना जा सकता है। महर्षि पाणिनि ने विद् ज्ञाने, विद् सत्तायाम्, विद्लृ लाभे, विद् विचारणे और विद् चेतनाख्याननिवासेषु से वेद के अर्थ को निष्पन्न किया है। इन सभी अर्थों से वेद का समग्रत्व परिलक्षित होता है। वेद मात्र आदिदैविक एवं आध्यात्मिक की बात नहीं करता अपितु भौतिक सत्ता को स्वीकार करते हुए अभौतिक सत्ता का भी प्रतिपादन करता है। भौतिक एवं अभौतिक पक्ष के सन्दर्भ में यजुर्वेद में वर्णन मिलता है कि -

अन्धं तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः ॥ (यजु. ४०/१२)

जो मनुष्य अविद्या (भौतिक) की ही उपासना करते हैं वे गहन अन्धकार में जाते हैं और जो मात्र विद्या (अध्यात्म) में रमते हैं वे उनसे भी अधिक गहनतम अन्धकार में जाते हैं।

इस मन्त्र में आविद्या का अभिप्राय भौतिक, अनीश प्रकृति, सृष्टि एवं जगत् के ज्ञान से तथा विद्या का अभिप्राय ईश, ब्रह्म एवं आत्म ज्ञान से है। सम्पूर्ण ज्ञान की सिद्धि विद्या (अभौतिक अर्थात् अलौकिक ज्ञान) एवं अविद्या (भौतिक अर्थात् लौकिक ज्ञान) से ही सम्भव है। भौतिक सत्ता के बिना अभौतिक की सिद्धि कथमपि सम्भव नहीं हो सकती है, क्योंकि आत्मतत्त्व के लिए किसी न किसी शरीर की आवश्यकता होती है। बिना शरीर के आत्मा सत्ता नहीं रह सकती क्यों कि शरीर ही आत्मा का अधिकरण है और आत्मा ज्ञान (वेद) का अधिकरण है। जैसा कि आचार्य प्रतिपादित करते है - **ज्ञानाधिकरणमात्मा।** आत्मा और परमात्मा में वही सम्बन्ध है जो गणित शास्त्र के शून्य और अनन्त में है। वेद एक अलौकिक ज्ञान है जिसकी सिद्धि मात्र प्रत्यक्ष और अनुमान से सम्भव नहीं है। यथा -

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एतद् विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता॥

वेदों के माध्यम से भारतीय चिन्तन मनीषा की अविरल धारा अनवरत प्रवाहित होती आ रही है। इसी क्रम में वेदविद्या अनुसन्धान पत्रिका आप सुधी जनों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए

प्रतिष्ठान हर्ष का अनुभव कर रहा है। वेद विद्या का यह २७वाँ पुष्प है। जिसमें त्रिपथगा के समान संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में निबद्ध अनुसन्धान को प्रोत्साहित करने वाले शोध पत्र विद्यमान है, जो वेद के जिज्ञासु जनों एवम् अध्येताओं के लिए विशेष उपकारक सिद्ध होंगे यह मेरी धारणा है।

इस अङ्क के सभी विद्वान् लेखकों के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ और उनसे यह कामना करता हूँ कि इसी प्रकार वेद विद्या की सेवा करते हुए वेदज्ञान को अध्येताओं एवं जिज्ञासुओं के समक्ष उपस्थापित करते रहेंगे।

इस अङ्क के महत्त्वपूर्ण शोधपत्रों को सुव्यवस्थित करने में वेद विद्या प्रतिष्ठान के परियोजना समिति के सदस्यों एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. देवानन्द शुक्ल एवम् अक्षर संशोधक डॉ. सदानन्द त्रिपाठी को विशेष धन्यवाद देता हूँ जिसके निरन्तर प्रयास एवं संलग्नता के कारण यह अङ्क प्रकाशित हो सका। इस अङ्क के प्रकाशन से जुडे सभी प्रतिष्ठान के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारियों को भी में साधुवाद देता हूँ। शमिति।

प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी
सचिव
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान,
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, उज्जैन